अब अधुनिक विज्ञान से जुड़े पहलूओं पर विचार करे ...

विज्ञान तो सब घटनाओंके लिए कुछ ना कुछ कारण देने की कोशिश करता है, लेकिन यह नहीं जानता कि किसी व्यक्ति की स्थिति के बारे में सवालों के जवाब देने के लिए कैसे आगे बढ़ें। ऐसा क्यूं है कि किसी को अमीर घर में जन्म मिलता है तो किसीको गरीब घर में। विज्ञान के पास ऐसी कोई मशीन नही है जो ये बता सके की एक जीव गधा तो दूसरा कुत्ता क्यूं है? यदि विज्ञान ये मानता है कि बिना कारण के कार्य नही हो सकता तो उपर्युक्त बातों का भी कोई कारण होना जरुरी है। लेकिन इन सब विषयों में विज्ञान की कोई गती नही है।

विज्ञान किसी भी भावनाओं से रहित, खाने, पीने, देखने आदि जैसी सभी घटनाओं का विश्लेषण करता है। विज्ञान भावनाओं पर विचार किए बिना जैविक क्रियाओं पर विचार करता है , जबकि भावनाएं क्रियाओं का मूल हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इसका अर्थ है कि विज्ञान मूल कारण को संबोधित नहीं कर रहा है, बल्कि मूल कारण के परिणामों को संबोधित कर रहा है।

यदि आप देखें कि ब्रह्मांड के कारण के बारे में शोधकार्य की दिशा वस्तुओं से यौगिकों ओर, यौगिकों से अणुओं की ओर, अणुओं से परमाणुओं की ओर, परमाणुओं से न्यूक्लियॉन की ओर फिर न्यूक्लियॉन के उपखंडों से लेकर ईश्वर के कण तक पहुँचती हैं।

इसका मतलब है कि सृष्टी के मूल कारण की खोज में

विज्ञान स्थूल वस्तुओंस से सूक्ष्म कणों की ओर आगे बढ़ रहा हैं। सूक्ष्म तत्व स्थूल तत्व का गठन करते हैं।

भावनाएं इतनी सूक्ष्म हैं कि कोई भी उन्हें देखने में सफल नहीं है। मन जो इच्छाएं उत्पन्न करता है वह प्रेक्षणों से परे है। केवल मूर्ख ही मन की उपस्थिति को अस्वीकार करेंगे क्योंकि सभी वैज्ञानिक खोजें मानव मन का परिणाम हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

अहंकार, मैं की भावना, अभी तक ज्ञात नहीं है। अहंकार सभी के लिए महत्वपूर्ण है। विज्ञान भौतिक रूप से इसका निरीक्षण नहीं कर सकता।

विज्ञान मृत्यु के अपने विश्लेषण पर निर्भर रहता है। लेकिन मन के संबंध से जीवित कार्य कैसे संपन्न होते है ये बताने में विफल रहता है।

विज्ञान मस्तिष्क के भीतर विभिन्न सूचनाओं के हस्तांतरण को समझने में विफल रहता है। वह इकाई मन है जो विभिन्न केंद्रों पर प्राप्त सभी सूचनाओं का समन्वय करती है। अन्यथा, उदाहरण के लिए, आप जो देखते हैं वह मस्तिष्क में दृष्टि केंद्र पर रहेगा और आप जो देखते हैं उसके आधार पर कोई कार्रवाई संभव नहीं होगी क्योंकि अन्य केंद्रों के कार्यों के लिए संवाद करने का कोई तरीका नहीं है। यह संवाद मन के कारण ही संभव है।

अगर वह मन है, तो मन को किससे ऊर्जा मिलती है?

क्योंकि मन भौतिक ऊर्जा को नियंत्रित करता है। भौतिक ऊर्जा स्वयं वांछित कार्यों में तब्दील नहीं हो सकती है। अन्यथा ऊर्जा का कोई भी स्रोत एक जीवित प्राणी के रूप में व्यवहार करेगा।

इसका मतलब ये है कि जीवित रहने के लिए और भौतिक ऊर्जा पर नियंत्रण करने के लिये एक चेतन ऊर्जा का होना जरूरी है। ऐसी ऊर्जा को हम जीवन शक्ति कहते हैं। यह महत्वपूर्ण ऊर्जा मन में उत्पन्न इच्छाओं के अनुसार भौतिक ऊर्जा को निर्देशित करती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

इस महत्वपूर्ण ऊर्जा का स्रोत आत्मा है। जब आत्मा मन, बुद्धी के साथ शरीर छोड़ती है , तो जीवन शक्ति खो जाती है। दिल सहित दिमाग आदि निष्क्रिय हो जाते है। एक जीवित शरीर मृत अवस्था को प्राप्त होता है। इस प्रकार शरीर को जीवित रखने के लिए आत्मा की नितांत आवश्यकता है।

एक बार आत्मा की आवश्यकता स्थापित हो जाने के बाद, पुनर्जन्म स्वयं सिद्ध हो जाता है।

चूंकि आत्मा इच्छा होने पर भी ब्रह्मांड का निर्माण नही कर सकती, इसलिए एक सर्वसमर्थ परमात्मा का होना अनिवार्य है। जरूरी है वो भगवान जो अपनी इच्छा के अनुसार ब्रह्मांड का निर्माण करेगा।

अतएव ईश्वर जैसा व्यक्तित्व अवश्य अस्तित्व में है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132